Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III | ISSUE- XII | Dec. | 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

जनसंचार माध्यम और हिन्दी

प्रा. जेलित कांबळे
हिन्दी विभाग
विठ्ठलराव पाटील महाविद्यालय, कळे

आज का युग संचार क्रांति और सूचना प्राद्योगिकी का युग है । यही संचार क्रांति विश्व में समृध्दि और विकास का मापदंड बन गई है । किसी भी सूचना के व्यापक प्रचार प्रसार कें लिए उसका जन्मभाषा में होना आवश्यक है । हिन्दी आज विश्व की एक मान्यताप्राप्त और प्रतिष्ठित भाषा बनी है । वह विश्व के विभिन्न देशों में बसे हुए भारतियों की संपर्क भाषा भी है । भारत के अलवा विश्व के कई विश्व विद्यालयों में हिन्दी भाषा की शिक्षा दी जा रही है । हिन्दी भाषा के विश्वव्यापी प्रसार के लिए सभी दृष्टियों से आज हिन्दी भाषा जनसंपर्क के रूप में कार्य कर रही है ।

आज के भूमंडलीकरण के युग में प्राद्योगिकी एक हथियार बन गयी है । भूमंडलिकरण के कारण दुनिया सिमटती हुयी नजर आ रही है । आज विश्व में ऐसा कोई देश नही है, जिस पर हिन्दी भाषा का प्रभाव न पडा हो । भाषा बोलनेवालों की संख्या की दृष्टी से हिन्दी भाषा विश्व की सबसे ज्यादा बोलने वालों की भाषा है । हिन्दी भाषा की विकास की दृष्टि से इसे देखा जाये तो दुनिया की सबसे सरल, सुगम और आकर्षण निर्माण करनेवाली भाषा है ।इसलिए हिन्दी का विकास बहुत तेजी से हो रहा है ।

भूमंडलीकरण के इस युग में समाचार पत्र, आकाशवाणी, दुरदर्शन, फिल्मों, मल्टिमीडिया आज जनसंचार के प्रभावी माध्यम बने हुये है । ज्ञान, मनोरंजन और नई - नई जानकारी यह इन संचार माध्यमों का कार्य है । ‘‘ज्ञात हो कि सूचना विस्फोट के युग में मीडिया एक बडा उद्योग है । इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हो या प्रिंटमीडिया, वे आज मिशन से प्रेरित नही है, अपितु लाभाकांक्षी उद्योग है ।’’ ज्ञान मनोरंजन और शिक्षा के साथ - साथ सूचना का एक विशेष उत्तरदायित्व समाचार, रेडिओ दुरदर्शन व्दारा निर्वाह किया जा रहा है । आज हम देख रहे है दुरदर्शन पर समाचारों को बेचने की होड लगी हुयी है । डॉ. वीणा श्रीवास्तव ने एक सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की है, उनके अनुसार ‘‘अंग्रेजी समाचार चैनलों को सामान्यतः ३१ मिनिट तक और हिन्दी समाचार चैनलों को २९२ मिनिट तक सुना जाता है ।’’ कहा जा सकता है कि आज प्रिंटमीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनो में हिन्दी के लिए बाजार है ।

उपग्रहो के कारण आज संचार की दुनिया में पर्याप्त विकास हुआ है । उपग्रहों ने सूचना क्रांति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इनके कारण हम रेडिओ, दुरदर्शन, सिनेमा, संगणक फॅक्स प्रणाली, इमेल सुविधा, इंटरनेट प्रणाली आदि के कारण हिन्दी भाषा का बडी मात्रा में विकास हुआ है ।

१) रेडिओ - आज के युग में भी रेडिओ एक ऐसी चिज है । जो हमारे पास से हटती नही है । रेडिओ पर प्रसारित कार्यक्रमों ने जनता को हिन्दी भाषा को सिखने के लिए मजबूर कर दिया है । रेडिओं पर ऐसे कई कार्यक्रम होते है जो दिल को छू लेते है इन्हीं कारणों से आज भी रेडिओ की महत्वपूर्णता कम नही हुयी है ।

रेडिओपर संगीत, समाचार के साथ - साथ हम ज्ञानवर्धक बातों को सुन सकते है । हिन्दी कार्येक्रमों के कारण आज घर - घर मे रेडियो के व्दारा हिन्दी भाषा पहूँच गयी है ।

२) दूरदर्शन - दूरदर्शन दृश्य - श्राव्य माध्यमों मे सबसे प्रभावशाली और सशक्त संचार माध्यम है । दूरदर्शन पर प्रसारित कई धारावाहिक जैसे रामायण, महाभारत, बुध्दा, अशोका, जोधा-अकबर, टिपू सुलतान, श्रीकृष्ण, जय हनुमान, चंद्रकांता, पवित्र रिस्ता, सॉस भी कभी बहू थी, चित्रहार, रंगोली, छायागीत, योग-प्राणायाम, फिल्में, कार्टून शो आदि के कारण छोटे - बच्चे भी हिन्दी सीख रहे है । और उन्हे अवगत हो रही है । इस के कारण हिन्दी भाषा जन - जन मे पहूँच गयी है ।

३) हिन्दी सिनेमा - आज हिन्दी सिनेमा और हिन्दी सिनेमा के कलाकारों ने जिस प्रकार से हॉलीवूड के फिल्मे हमारे यहॉ पापुलर हो रही है उसी तरह से हिन्दी फिल्मे आज दुनिया ने पहूँच गयी है । इस के कारण हिन्दी भाषा को भी दुनिया में पहूँचाने के लिए हिन्दी सिनेमा महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है ।

४)कम्प्यूटर - सागर को गागर में भरने की क्षमता रखनेवाली मशीन को संगणक या कम्प्यूटर कहा जाता है । जिस मे व्यवहारिक सत्यता, शुद्धता, तीव्रता, विश्वसनीयता, सुंदरता कां बनाये रखने मे माहिर है, हिन्दी मीडिया में कम्प्यूटर संचार प्रणाली के व्दारा हिन्दी भाषा का विकास हो रहा है । प्रो. श्याम चरण दूबे कहते है , ''संचार की प्रक्रिया तब होती है जब की एक स्थान से दूसरे स्थान सूचना पहूँचाई जाती है ।''

५) हिन्दी में इ-मेल प्रणाली - इंटरनेट लोगो और कम्प्यूटरों के बीच सूचना का आदान - प्रदान इमेल सुविधा के लिए सॉफ्टवेअर कंम्पनी 'यूवी इन्फॉरमेंशन कंम्पनी सिस्टर इंदोर ने हिन्दी देवनागरी में नि शुल्क - इ-मेल सेवा आरंभ की है । यह देवनागरी के विकास में इस सदी का महत्वपूर्ण कदम रहा है । इस प्रणाली के कारण रोमन मे टाईप हुआ पत्र हम देवनागरी लिपी मे भी देख सकते है । इससे हिन्दी भाषा मे बडा ही विकास हुआ है ।

६) इंटरनेट सुविधा - आज हिन्दी में जनसंचार माध्यमों में नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में कम्प्यूटर और इंटरनेट का महत्वपूर्ण स्थान है । कम्प्यूटर मानव मास्तिष्क की भॉती काम करता है पर इसकी गती अत्यंत तेज होती है । रविंद्र शुल्क के मतानुसार ''इंटरनेट या सरल शब्दो में सिर्फ नेट कम्प्यूटरों को जोडनेवाले विभिन्न विश्वव्यापी संजालों का बृहद संसार बनता है । आज समाज के लिए इंटरनेट जैसी की आधारभूत जरूरत है । जैसे की सडके, टेलिफोन या विद्युत उर्जा ।'' आज हम इंटरनेट व्दारा कितनी भी दूर रहने वाले व्यक्तिसे बातचित, चर्चा हो सकती है । किसी भी किताब को हम ऑनलाईन पढ ले सकते है । आज हम इंटरनेटर पर हिन्दी मे ऑन लाईन परीक्षा देने की फॉर्म भरने की सुविधा भी हो गई है । हिन्दी भाषा के विकास को इससे नई दिशा मिली है ।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि सूचना प्राद्योगिकी साधनों ने दुनिया को बहुत समिप लाकर रखा है । आज हिन्दी को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर अपनी असली जगह बनान ही है तो यह अत्यावश्यक है कि वैचारिक रूप से हिन्दी के पारंपारिक ढॉचे से छुटकारा पाना इसका मतलब है अपनी पारंपारिक सांस्कृतिक प्रणाली से निकलकर भूमंडलिकरण को आपनाना होगा । इससे भाषा में आये नये बदलोंकों आपनाकर हिन्दी भाषा को और भी सशक्त बनाना होगा । हिन्दी के बदलते रूप, रचना और

संरचना को स्वीकार लेना नयी सदी के हिन्दी की अनिवार्यता है । प्रसार माध्यमो की सहायता से राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास संभव है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१) संपा. रतनकुमार पाण्डेय - 'अनभै' जनवरी - मार्च, २०१०, पृष्ट २१
२) 'स्मारिका' हिन्दी के विस्तार में टी.व्ही का योगदान, सातवा विश्व हिन्दी संमेलन,पृष्ट ११८
३) डॉ. माधव सोनटक्के - प्रयोजनमूलक हिन्दी
४) डॉ. अर्जुन तिवारी - जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com